बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल में आर्थिक जीवन

डॉ. कमलेश कुमार

सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग

SNSRKS COLLEGE SAHARSA

बुद्ध काल या मौर्यपूर्व काल में आर्थिक जीवन

बुद्ध कालीन अर्थव्यवस्था या पूर्व मौर्यकाल की आर्थिक स्थिति को कृषि, जनसंख्या एवं नगरीकरण, उद्योग, शिल्प एवं व्यवसाय, मुद्रा एवं पूंजी बाजार का उद्भव, श्रेणियों के उद्भव के रूप में समझा जा सकता है.

कृषि

लंबे समय बाद कृषि में अधिशेष (जरूरत से अधिक उत्पादन) उत्पन्न हुआ. इससे पूर्व हड़प्पा काल में कृषि में अधिशेष होने के साक्ष्य मिलते हैं. पहली बार धान की रोपनी की तकनीक (शाली एवं महाशाली) ईजाद हुई. लोगों ने गंगा के उपजाऊ पन तथा प्राकृतिक सिंचाई का लाभ उठाया. फलतः कृषि के उत्पादन में व्यापक वृद्धि हुई.

जनसंख्या वृद्धि एवं नगरीकरण

साहित्य एवं पुरातात्विक साक्ष्य से इस समय जनसंख्या वृद्धि के प्रमाण मिलते हैं. हड़प्पा काल के बाद दूसरी बार गंगा घाटी में पुनः नए नगरों का उद्भव हुआ. जैसे काशी, कौशांबी, साकेत, विशाल, चंपा, राजगृह आदि.

उद्योग, शिल्प एवं व्यवसाय

पूर्व की अपेक्षा इस काल में व्यवसायों की संख्या में वृद्धि के प्रमाण मिलते हैं. केवल राजगृह में 18 व्यवसायों की चर्चा मिलती है, जिसमें सोना, चांदी, लोहा, तांबा, नमक, शीशा, एनबीपीडब्ल्यू मृदभांड (नॉर्थ ब्लीच पॉलिश्ड वेयर, जो की उच्च वर्गीय मृदभांड था) आदि मुख्य थे.